



## हनुमान चालीसा

### ॥ दोहा ॥

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।  
बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायकु फल चरि ॥

बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवन-कुमार ।  
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं हरहु कलेस बिकार ॥

### ॥ चौपाई ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर ।  
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ॥ १ ॥

राम दूत अतुलित बल धामा ।  
अञ्जनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥ २ ॥

महाबीर बिक्रम बजरङ्गी ।  
कुमति निवार सुमति के सङ्गी ॥ ३ ॥

कञ्चन बरन बिराज सुबेसा ।  
कानन कुण्डल कुञ्चित केसा ॥ ४ ॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै ।  
काँधे मँजु जनेउ साजै ॥ ५ ॥

सङ्कर सुवन केसरीनन्दन ।  
तेज प्रताप महा जग बन्दन ॥ ६ ॥

बिद्यावान गुनी अति चातुर ।  
राम काज करिबे को आतुर ॥ ७ ॥

प्रभु चरित सुनिबे को रसिया ।  
राम लखन सीता मन बसिया ॥ ८ ॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा ।  
बिकट रूप धरि लङ्क जरावा ॥ ९ ॥

भीम रूप धरि असुर सँहारे ।  
रामचन्द्र के काज सँवारे ॥ १० ॥

लाय सञ्जीवन लखन जियाये ।  
श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥ ११ ॥

रघुपति कीही बहुत बड़ाई ।  
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥ १२ ॥

सहस बदन तुम्हारो जस गावैं ।  
अस कहि श्रीपति कण्ठ लगावैं ॥ १३ ॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा ।  
नारद सारद सहित अहीसा ॥ १४ ॥

जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते ।  
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥ १५ ॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीहा ।  
राम मिलाय राज पद दीहा ॥ १६ ॥

तुम्हारो मन्त्र बिभीषन माना ।  
लङ्केस्वर भए सब जग जाना ॥ १७ ॥

जुग सहस्र जोजन पर भानु ।  
लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥ १८ ॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ।  
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ॥ १९ ॥

दुर्गम काज जगत के जेते ।  
सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते ॥ २० ॥

राम दुआरे तुम रखवारे ।  
होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥ २१ ॥

सब सुख लहै तुम्हारी सरना ।  
तुम रच्छक काहु को डर ना ॥ २२ ॥

आपन तेज सहारो आपै ।  
तीनों लोक हाँक तें काँपै ॥ २३ ॥

भूत पिसाच निकट नहिं आवै ।  
महाबीर जब नाम सुनावै ॥ २४ ॥

नासै रोग हरै सब पीरा ।  
जपत निरन्तर हनुमत बीरा ॥ २५ ॥

सङ्कट तें हनुमान छुड़ावै ।  
मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥ २६ ॥

सब पर राम तपस्वी राजा ।  
तिन के काज सकल तुम साजा ॥ २७ ॥

और मनोरथ जो कोई लावै ।  
सोई अमित जीवन फल पावै ॥ २८ ॥

चारों जुग परताप तुम्हारा ।  
है परसिद्ध जगत उजियारा ॥ २९ ॥

साधु सन्त के तुम रखवारे ।  
असुर निकन्दन राम दुलारे ॥ ३० ॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के दाता ।  
अस बर दीन जानकी माता ॥ ३१ ॥

राम रसायन तुम्हारे पासा ।  
सदा रहो रघुपति के दासा ॥ ३२ ॥

तुम्हारे भजन राम को पावै ।  
जनम जनम के दुख बिसरावै ॥ ३३ ॥

अन्त काल रघुबर पुर जाई ।  
जहाँ जन्म हरिभक्त कहाई ॥ ३४ ॥

और देवता चित्त न धरई ।  
हनुमत सेइ सर्व सुख करई ॥ ३५ ॥

सङ्कट कटै मिटै सब पीरा ।  
जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥ ३६ ॥

जय जय जय हनुमान गोसाई ।  
कृपा करहु गुरुदेव की नाई ॥ ३७ ॥

जो सत बार पाठ कर कोई ।  
छूटहि बन्दि महा सुख होई ॥ ३८ ॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा ।  
होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥ ३९ ॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा ।  
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा ॥ ४० ॥

### ॥ दोहा ॥

पवनतनय सङ्कट हरन मङ्गल मूर्ति रूप ।  
राम लखन सीता सहित हृदय बसहु सुर भूप ॥

This Image is Copyright Of Spiritualism.com  
© 2018 Spiritualism.com | All Rights Reserved

SPIRITUALISM.COM

Image Can Only Be Used With Proper Credit In Content  
<https://www.spiritualism.com/shri-hanuman-chalisa-hindi-image>